मध्यकाल में अकाल

डॉ. मुकुन्द शरण त्रिपाठी*

अंग्रेजी शब्द 'फेमीन' का हिन्दी रूपान्तर अकाल है। यह शब्द लैटिन भाषा के 'फेमीज'[1] शब्द से निस्तत है जिसका अर्थ होता है 'क्षुधा' या 'भूख'। इस प्रकार अकाल एक दूसरे नाम 'अभाव' से भी जाना जाता है। इसे 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज' से परिभाषित करते हुए बतलाया गया है कि "अकाल या अभाव भूख की वह स्थिति है, जिसमें किसी क्षेत्र की जनसंख्या साधारण खाद्य की पूर्ति को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाती है।"[2] भारतीय आर्थिक इतिहास प्रलयकारी अकालों का इतिहास है। भारतीय मानव जीवन प्रारम्भ से ही कृषि पर निर्भर रहा है और कृषि भौगोलिक मानसून की अनिश्चितताओं के कारण अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि दोनों का ही शिकार होती रही है। फलस्वरूप प्रकृति का विनाशकारी स्वरूप अकाल के रूप में हमेशा परिलक्षित होता रहा है। रोमेश दत्त ने अपनी पुस्तक 'द इकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' में लिखा है कि "भारत में अकाल प्रत्यक्ष रूप में वार्षिक वर्षा के अभाव में पड़ते हैं, किन्तु इन अकालों की कठोरता तथा उससे प्रभावित कष्ट का अधिकांश कारण यहाँ के लोगों की दरिद्रता है।"[3] इस परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में अकाल पड़ने का कारण केवल प्राकृतिक नहीं थे। साधनों की कमी, अपव्यय, भूमि व्यवस्था और दुर्बल आर्थिक संगठन भी अकाल में सहायक थे। परन्तु आधुनिक युग के मजबूत औद्योगिक संगठन, गतिशील संचार साधन तथा यातायात के विकास ने अकाल के अर्थ एवं प्रकृति में आधारभूत परिवर्तन ला दिया।

भारतीय प्राचीन वाङ्मय अथर्ववेद, जातकों तथा कल्हण की राजतरंगिणी में अकाल का उल्लेख है। कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में "अकाल के राजा द्वारा प्रजा को बीज एवं खाने के लिये अनाज की व्यवस्था करने का विवरण दिया है।"[4] मध्यकालीन फारसी साहित्य में सबसे पहले खिल्जी काल में अकाल के व्यापक प्रभाव का उल्लेख मिलता है।[5] बर्नी इस घटना का उल्लेख अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में करते हुए लिखते हैं कि "जलालुद्दीन फिरोज खिल्जी के समय में अनावृष्टि के कारण दिल्ली एवं शिवालिक के प्रदेशों में सूखा पड़ गया। राजधानी अकालग्रस्त हो गयी। शिवालिक प्रदेशों में एक बूँद पानी भी नहीं बरसा। दिल्ली में अनाज की कीमतें अत्यधिक बढ़ गयी। अनाज का मूल्य एक जीतल प्रति सेर पहुँच गया। शिवालिक प्रदेश के लोग अपने परिवारों सहित दिल्ली आ गये। यद्यपि सुल्तान तथा अमीर लोग दिल्ली आये हुए लोगों को जो दरिद्रता की श्रेणी में पहुँच गये थे, उनकी क्षुधापूर्ति हेतु भिक्षा प्रदान करते रहें फिर

*सहयुक्त आचार्य, इतिहास विभाग,दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

भी समस्या का स्थायी निदान न हो सका। लोग २०-२० तथा ३०-३० के झुण्ड में एकत्रित होकर भूख के मारे यमुना नदी में डूबकर आत्महत्या करने लगे। यद्यपि धनी लोगों के दान से क्षुधाड़ितों को कुछ राहत जरूर मिली, किन्तु लम्बे समय तक इनके लिये सम्यक् व्यवस्था नहीं हो पायी। दूसरे वर्ष इतनी वर्षा हुई कि किसी को इस तरह की वर्षा याद न रही।"[6] यद्यपि बर्नी इस घटना का कारण एक दरवेश सिद्दी मौला की हत्या से जोड़ता है,[7] तथापि ऐसे भयंकर अकाल के समय शासन द्वारा जो उचित आपदा-प्रबंधन करना चाहिए वह नहीं हो पाया। जो सहायता भूखे लोगों को मिली उसके पीछे धार्मिक उद्देश्य ज्यादा था प्रशासनिक सहयोग कम।

सल्तनत काल में अकाल पीड़ित लोगों हेतु कोई सुविचारित नीति खिल्जी काल तक नहीं बन पायी। तुगलकाल में इस हेतु प्रयास जरूर हुआ, किन्तु यह प्रयास बहुत देर से हुआ। जैसे - मुहम्मद बिन तुगलक ने गद्दी पर बैठने के बाद कालानौर और पेशावर विजय हेतु जब अभियान शुरू किया तो वहाँ सैनिक खाद्यान्न उपलब्ध नहीं था तो सैनिकों को शिकार में किए गए पशुओं पर जीवन निर्वाह करना पड़ता था, इस नाते सेना शीघ्र उस स्थान से ऊब गयी तथा वह वहाँ से लाहौर चली गयी।[8] इससे स्पष्ट होता है कि शासन जब अपने सैनिकों के लिये व्यवस्था नहीं कर पाया तो आम जनता के लिये वह कैसे व्यवस्था कर पाती। किन्तु मुहम्मद बिन तुगलक इस घटना से जरूर सीख लिया तथा जब उसके राज्य में सन् १३३४-३५ में प्राकृतिक प्रकोपों के कारण अकाल पड़ा तो बर्नी जहाँ अपनी लेखनी से उसके कारणों को खोज करते हुए यह बतलाया है कि यह प्रकोप उसकी नीतियों के कारण हुई "दोआब में कर वृद्धि तथा प्राकृतिक प्रकोप का अविर्भाव लगभग एक साथ हुआ। फलतः अकाल का स्वरूप भयंकर हो गया। कृषक गाँव छोड़कर जंगलों में शरण ले लिए।"[9] इससे स्पष्ट है कि इस दौर में कृषकों की राहत के लिये सुल्तान की तरफ से कोई प्रयास नहीं हुए। किन्तु इब्नबतूता उसके ठीक विपरीत यह बताता है कि "जब अकाल के कारण दोआब का क्षेत्र कष्ट में पड़ गया तो उसका प्रभाव दिल्ली पर भी पड़ा। दिल्ली में अनाज की कमी हो गयी। ऐसी स्थिति में सुल्तान ने दिल्ली के नागरिकों को छः माह का राशन वितरित किया जिसकी मात्रा डेढ़ मगरबीरत्ल प्रति दिन था।"[10] यह अकाल बड़ा भयावह था। इसके प्रभाव अगले सात साल तक बना रहा।[11] यद्यपि इस बार अकाल से निपटने हेतु कुछ सम्यक् प्रशासनिक प्रयास जरूर हुए, किन्तु यह प्रयास कुछ विशेष स्थानों तक सीमित रहे। फिरोज तुगलक के समय १३६२-१३६६ के मध्य अकाल पड़े इसका विवरण अफीफ ने अपनी पुस्तक तारीख-ए-फिरोजशाही में किया है। वह थट्टा के अकाल का विवरण देते हुए लिखता है कि "अकाल के कारण थट्टा में अनाज का मूल्य बढ़ने लगे, लोग मरने लगे। अनाज का भाव एक से दो तन्के प्रति सेर हो गया था।"[12] जनता कष्ट में थी। चूँकि यह विद्रोही क्षेत्र था, इसलिए सुल्तान फिरोजशाह ने जनता की राहत के लिये कोई कार्य न किया। जो सैनिक

उसके साथ थट्टा गये थे, उनके भोजन पानी की व्यवस्था हुई। इस नाते इस क्षेत्र में लोग सैनिक भर्ती हेतु उत्सुक हुए क्योंकि उससे उनकी क्षुधापूर्ति की संभावना थीं।

१६वीं शताब्दी में मुगलों का व्यवस्थित शासन के दौरान भी अकाल की स्थिति भयावह रहीं। बारबोसा कोरो मण्डल तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में अकाल पड़ने तथा उसके प्रभाव का उल्लेख करता है। उसके अनुसार अकाल के दौरान कुछ जहाज मालाबार से भोजन लेकर आते थे तथा वापसी के समय गुलाम भरकर ले जाते थे। उस समय बच्चे एक रूपये से भी कम में बेचे जाते थे।[१३] अब्दुर्रज्जाक के विवरण के आधार पर मोरलैण्ड ने स्वीकार किया कि कोरोमण्डल तट पर पड़ने वाले अकाल से दक्षिण भारत की आबादी काफी कम हो गयी थी। किन्तु यह कमी कितनी थीं, उसका उसने कोई आंकड़ा नहीं दिया है।[१४] अकबर के शासनकाल के प्रारम्भ में दिल्ली एवं आगरा क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा। बदायूँनी का कथन है कि इसी दौरान दिल्ली पर हेमू ने आक्रमण किया। उसने अपनी निष्ठुरता का परिचय दिया। उसने अपने हाथियों को चावल, गन्ना, मक्खन खिलाकर जीवित रखा तथा अकाल से मरने वाले व्यक्तियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उस समय खाद्यान्न के अभाव में व्यक्ति-व्यक्ति को खाने के लिए उत्सुक था तथा जो लोग भूख से मरते थे उनके ओठों पर मात्र रोटी शब्द होता था।[१५] उसी तरह का विवरण अबुल फजल ने भी अपनी पुस्तक 'अकबरनामा' में दिया है। उसकी भयावहकता का वर्णन करते हुए वह लिखता है कि सत्तर लोगों के परिवार में उसके पिता एक सेर अनाज ले आये जिसे पानी में नमक डालकर उबाला गया तथा एक-एक गिलास पानी के सहारे उन्हें एक दिन और एक रात गुजारनी पड़ी।[१६] उस अकाल की भयंकरता को देखने के बाद अकबर ने अपने साम्राज्य के प्रत्येक भाग में अन्न के गोदाम बनवायें ताकि अकाल के समय गरीबों एवं दरिद्रों को अन्न की सहायता दी जा सके जिससे अकाल मृत्यु कम से कम हो। उसने दरसेरी नामक कर लगाकर उक्त गोदामों को भरने की व्यवस्था की।[१७] उसके अतिरिक्त उसने बहुत से खैरात खाने खुलवाये जहाँ से गरीबों तथा दरिद्रों को मुत भोजन मिलता था। इस विभाग का प्रबन्ध मुहर्रिर एवं दारोगा किया करते थे।[१८]

१५७४-७५ में गुजरात में अकाल पड़ा। इस समय अकबर बिहार अभियान पर था। अकाल की भयंकरता पर अबुल फजल लिखता है कि यह अकाल भयंकर रूप से छः माह तक रहा। इससे खाद्यान्नों के मूल्य बढ़ने लगे। लोगों का जीवन संकट में पड़ गया। जीवन बचाने के लिये लोग अपना मूल स्थान छोड़कर इधर-उधर भागने लगे।[१९] अभियान पर होने के नाते इस क्षेत्र में इन पीड़ितों हेतु समुचित व्यवस्था नहीं हो पायी। इसका प्रभाव कई वर्षों तक इस क्षेत्र पर बना रहा। अभी स्थिति पूर्णतः सुधर नहीं पायी थी कि १५८३-८४ में सूखा पड़ गया। अनाज की कमी हो गयी। फलतः मूल्य बढ़ गये। भूख से अनेक लोग मर गये।[२०] अकबर ने यहाँ के

लोगों की सहायता हेतु कर्मचारी नियुक्त किये।[२१] सेना में नौकरियों में द्वार खोले। लोगों की जीवन रक्षा हेतु धर्मपुरा, खैरपुरा तथा जोगीपुरा नामक तीन भोजनालय निर्मित कराया।[२२] अकबर के शासन काल के अंतिम दौर १५९५-९६ में काश्मीर एवं लाहौर में अकाल पड़ा। उसका प्रभाव चार वर्षों तक बना रहा। मरने वालों की संख्या उस दौर में अत्यधिक थी। अकबर ने यहाँ पर पीड़ितों की सहायता हेतु १२ लंगर खोले। ८० हजार लोगों को भोजन मिलता था। बेरोजगारी दूर करने हेतु किले का निर्माण प्रारम्भ किया।[२३] एक अलग विभाग कायम किया गया। फरीद बुखारी अकाल अधिकारी बनाया गया।[२४]

जहाँगीर के शासनकाल के नवें वर्ष १६१४ में अकाल पड़ा जिससे दिल्ली एवं पंजाब के लोग अत्यधिक प्रभावित हुए।[२५] १६१८-१९ में दक्षिण भारत में अकाल पड़ा कोरोमण्डल का क्षेत्र प्रभावित हुआ।[२६] सबसे अधिक अकाल शाहजहाँ के काल में पड़ा। मोरलैण्ड ने इसकी संख्या दस बतलाया है। शाहजहाँ के शासन काल के प्रारम्भिक वर्षों १६३०-३१ में अकाल पड़ा। इसका क्षेत्र दक्षिण में रहा।[२७] गोलकुण्डा, अहमदनगर, गुजरात तथा मालवा के कुछ भागों की दशा खराब हो गयी साथ ही पंजाब एवं कश्मीर में अन्न का अभाव हो गया। समकालीन इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी ने जनता के कष्ट तथा उनके दुःख तथा जनहानि का विवरण बहुत ही हृदय विदारक शब्दों में दिया है। वह लिखता है, "मनुष्य एक रोटी के लिये अपने प्राण बेचने को व्याकुल था, किन्तु ग्राहक नदारद थे। बहुत दिनों तक बकरी के मांस के नाम पर कुत्तों का मांस बिकता रहा। आटे में हड्डियों का चूर्ण मिलाकर बेचा जाता था। लोग एक दूसरे को खाने लगे। पुत्र की मोह की अपेक्षा उसका मांस अधिक रूचिकर हो रहा था। दीन-दुखियों को राहत पहुँचाने के उद्देश्य से सम्राट शाहजहाँ ने लंगर खाने तथा दानगृह स्थापित कर दिये। प्रति सोमवार को ५ हजार रूपये बुरहानपुर के गरीबों में बांटे जाते थे तथा अहमदाबाद में भारी पैमाने पर लगान माफ कर दिया गया।"[२८] सन् १६४१ में अत्यधिक वर्षा के कारण कश्मीर में फसल खराब हो गयी और अन्न का अभाव हो गया। लगभग ५० हजार व्यक्ति अपना घर-बार छोड़कर लाहौर आ गये। इस समय शाहजहाँ यहीं पर था। अकाल से पीड़ित लोग समूह बनाकर शाहजहाँ के झरोखा-दर्शन कार्यक्रम में पहुँचकर अपना दुखड़ा रोये। दुखड़ा सुनने के बाद सम्राट तत्काल उनमें एक लाख रूपया बाँटने का आदेश दिया तथा प्रतिदिन उन्हें दो सौ रूपया का भोजन दिया जाय। कश्मीर में अकालग्रस्त जनता को राहत पहुँचाने के उद्देश्य से तरबियत खाँ के पास तीस हजार रूपये भेजे गये और उसको यह निर्देश दिये गये कि रोटी और दाल के वितरण के लिये पाँच लंगर स्थापित करें। परन्तु तरबियत खाँ स्थिति को सम्भालने में असमर्थ रहा। फलतः उसको हटा दिया गया। उसके स्थान पर सम्राट ने जफर खाँ को नियुक्त किया तथा जनता को राहत पहुँचाने के लिये उसे बीस हजार रूपये प्रदान किये।[२९]

सन् १६४६ में पंजाब में अकाल पड़ा। सम्राट के आदेशानुसार इस प्रांत में पाँच पाठशालाएँ स्थापित हो गयी और यहाँ पका-पकाया भोजन बंटने लगा। सम्राट ने सैय्यद जलाल को यह आदेश दिया कि वह दीन-दुखियों में दस हजार रूपया वितरित करें। शासन ने बिके हुए बच्चों को पैसे देकर वापस ले लिया तथा उन्हें उनके माता-पिता को सौंप दिया। फरवरी सन् १६४७ ई. में शाहजहाँ ने पंजाब में राहत कार्यों के लिये तीस हजार रूपये की राशि और प्रदान की।

इसमें सन्देह नहीं कि आज के समान अकाल राहत की शासन के पास कोई सुनिश्चित नीति नहीं थीं, किन्तु यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि सम्राट को जनता के दुःख दर्द की चिन्ता थी। उनकी जैसे ही लोगों की दयनीय स्थिति की तरफ नजर जाती थीं, वह उनका निदान करने के भरसक प्रयास करते थे। मुगल इतिहास में ऐसे संकेतों के ब्योरों का बार-बार उल्लेख किया गया है। किन्तु ये राहत उपाय अपर्याप्त जरूर रहे होंगे, किन्तु उस युग में इससे अधिक क्या किया जा सकता था, यह भी सोचनीय बिन्दु है।[३०] उसके अलावा एक तथ्य और समझने योग्य है, वह यह कि उस युग में अकाल की स्थिति व्यापक न होकर प्रायः स्थानीय अथवा क्षेत्रीय रूप तक ही सीमित रह जाती थी।[३१]

सन्दर्भ :

१. ए न्यू इंग्लिश डिक्शनरी, सम्पादित, सर जेम्स ए मूरी, पृ. १६.
२. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज, भाग-६, पृ. ८५.
३. द इकनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग-१, पृ. ३७.
४. रोमेश दत्त, ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया फेमीन्स, पृ. १४.
५. के.एस.लाल, हिस्ट्री ऑफ खिल्जी, पृ. ३२.
६. बर्नी, तारीख-ए-फिरोजशाही, पृ. २०६.
७. वही, पृ. २०८.
८. इसामी-फुतुहुस्सलातीन, पृ. ४२३.
९. बर्नी, तारीख-ए-फिरोजशाही, पृ. ४७६.
१०. इब्नबतूता, रेहला, पृ. ८५.
११. इलियट एण्ड डाउसन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई हरओन हिस्टोरियन, भाग-३, पृ. २३८.
१२. अफीफ, तारीख-ए-फिरोजशाही, पृ. २३६.
१३. हरिशंकर श्रीवास्तव, द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन फेमीन्स, पृ. १४.
१४. डब्ल्यू.एच.मोरलैण्ड, इण्डिया एण्ड द डेथ ऑफ अकबर, पृ. २४६.

१५. इलियट एण्ड डाउसन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई हरओन हिस्टोरियन, भाग-५, पृ. ४६०-६१.
१६. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग-२, पृ. ६६.
१७. पी. सरन, द प्राविन्सियल गवर्नमेण्ट ऑफ द मुगल्स, पृ. ४१६.
१८. अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, पृ. १६६-२००.
१९. इलियट-डाउसन, भाग-५, पृ. ३८४.
२०. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग-६, पृ. १६३.
२१. इलियट-डाउसन, भाग-६, पृ. १६३.
२२. अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, पृ. २००-२०१.
२३. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग-६, पृ. ७२७.
२४. हरिशंकर लाल, पृ. १७.
२५. एडवर्ड एण्ड गैरेट, मुगल रूल इन इण्डिया, भाग-२, पृ. २४०.
२६. मोरलैण्ड, इण्डिया फ्राम अकबर टू औरंगजेब, पृ. २०८.
२७. वी.पी. सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ. ३११.
२८. अब्दुल हम्मीद लाहौरी, पादशाहनामा, पृ. ३६२-६४.
२९. वी.पी. सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ. ३१२.
३० मोरलैण्ड, इण्डिया फ्राम अकबर टू औरंगजेब, पृ. २१३.
३१. वी.पी. सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ. ३१२.

******